हनुमद् प्रार्थना

हनुमान तुम्हारे पूजन को, हम थाल सजा कर लाये हैं ।
दु:ख दर्द के दो गीले मोती, पलकों में छिपा कर लायें हैं ।
तू अन्न-धन देने वाला है, और जग दाता कहलाता है ।
सुनते है तेरे दरबार से कोई, खाली हाथ नहीं जाता है ।
आशा के दो हरफों में हम, तकदीर सजा कर लाये हैं ।
हनुमान तुम्हारे पूजन को.....
किस तरह करुं पूजा तेरी, पूजा का कुछ सामान नहीं ।
जो लुभा सके तेरे मन को, वह इस वीणा में तान नहीं ।
टूटे हुए दिल के तारों में, एक फरियाद बसाकर लायें हैं ।
हनुमान तुम्हारे पूजन को.....
उपहार तुझे देने केलिए, आकाश के तारे ला न सके
आरती तेरी करने को हम, रवि -शशि को भी पा न सके ।
एक श्वास की नाजुक बाती थी, उसे ही जलाकर लायें हैं ।
हनुमान तुम्हारे पूजन को.....
उजड़ी हुई इस फुलवाड़ी में, रो-रो के गुजारा करते हैं ।
आपकी ही एक शरण है हमें, आपका ही आसरा रखते हैं ।
हम अपने जिगर के छालों का, एक हार बनाकर लाये हैं ।
हनुमान तुम्हारे पूजन को.....

विवरण

हनुमान जी की पूजा के लिए हम पूजन सामग्री से परिपूर्ण थाल सजाकर लायें हैं। अपने दु:ख एवं दर्द से हमारी आँखों में आँसू आ जा रहें हैं, जिन्हे हम पलकों में ही छिपाकर लाये हैं ।

आप अन्न-धन सब कुछ देने वाले हो, इसलिए आप जगदाता कहलाते भी हैं,
आपके द्वार से कोई खाली हाथ लौट कर नहीं जाता है । हमें आपके

ऊपर भरोसा है, विश्वास है, इसलिए हम आशा की किरण के साथ आयें हैं, अपनी सजी हुई जिंदगी के लिए दुआ माँगने के लिए ।

हमारे पास आपकी पूजा केलिए कुछ भी सामग्री नहीं है, हम किस तरह आपकी पूजा करें ? और फिर हमारी वाणी में इतनी मधुरता या ताकत भी नहीं है, जो आपके मन को लुभा सके । हम अपने इस बुझे हुए हृदय में एक प्रार्थना आपके पास लेकर आयें हैं ।

आपको उपहार के रूप में देने केलिए आकाश के तारे भी न ला सकेंगे । आपकी आरती करने केलिए हम सूर्य एवं चन्द्रमा को भी न पा सकेंगे । हमारे जीवन
रूपी दीपक में एक सांस रूपी बाती ही है, उसे ही जलाकर हम आपके पास लायें हैं।

अपनी इस उजड़ी हुई जीवन रूपी फुलवारी में हम रो-रो कर ही गुजारा कर लेते हैं । आप ही का एक भरोसा लेकर हम आपकी शरण में आयें हैं । हम अपने शरीर के छालों का ही एक हार बनाकर लाये हैं। हनुमान जी की पूजा केलिए हम पूजन सामग्री से भरपूर थाल सजाकर लायें हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.